

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये चतुर्नरतितमं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে চতুর্নরতিতমং দশকম্ ॥

তৎরজ্ঞানোৎপত্তিপ্রকারবর্ণনং, বন্ধমোক্ষস্বরূপবর্ণনং,  
ভক্তিপ্রার্থনাবর্ণনং চ

শুদ্ধা নিষ্কামধর্মৈঃ প্রবরগুরুগিরা

তৎস্বরূপং পরং তে

শুদ্ধং দেহেন্দ্রিয়াদির্যপগতমখিল -

র্যাপ্তমারেদযন্তে।

নানাৎরশ্চৌল্যকার্ষ্যাদি তু গুণজরপু -

সঙ্গতোহধ্যাসিতং তে

রহেদারুপ্রভেদেষ্টির মহদগুতা -

দীপ্ততাশান্ততাди ॥ 94.1 ॥

আচার্যাখ্যাধরস্থারণিসমনুমিল -

চ্ছিয়রূপোত্তরার -

ণ্যারেধোদ্ভাসিতেন স্ফুটতরপরিবো -

ধাগ্নিনা দহ্যমানে।

কর্মালীরাসনাতৎকৃততনুভুরন -

ভ্রান্তিকান্তারপূরে

দাহ্যভারেন রিদ্যাশিখিনি চ রিরতে

ৎরন্ময়ী খল্লরস্থা ॥ 94.2 ॥

এরং তৎপ্রাপ্তিতোহন্যো নহি খলু নিখিল -

ক্লেশহানেরূপাযো

নৈকান্তাত্যন্তিকাস্তে কৃষিরদগদষাড্ -

गुण्यषडकर्मयोगाः।  
दुर्बैकलैरकल्या अपि निगमपथा -  
स्तुफलान्यप्यराप्ता  
मत्तास्त्रां रिस्मरन्तः प्रसजति पतने  
यान्त्यनन्तान् रिषादान् ॥ 94.3 ॥

एरल्लोकादन्यलोकः क्वनु भयरहितो  
यं परार्धद्वयात्ते  
एरन्तीतस्सत्यलोकेहपि न सुखरसतिः  
पद्मभूः पद्मनाभ।  
एरं भारे एरधर्मार्जितवहत्तमसां  
का कथा नारकाणां  
तन्मे एरं छिन्नि वक्कं ररद कूपणव -  
क्को कूपापूरसिक्को ॥ 94.4 ॥

याथार्थ्याद्भुन्मयसैर्य हि मम न रिभो  
रस्तुतो वक्कमोक्के  
मायारिद्यातनुभ्यां तर तु रिरचितौ  
स्वप्नबोधोपमौ तौ।  
वद्वे जीरद्विमुक्तिं गतरति च भिदा  
तारती तारदेको  
डुङ्केत्त देहद्रमस्त्रो रिषयफलरसा -  
न्नापरौ निर्यथात्मा ॥ 94.5 ॥

जीरन्मुक्तंरमेरंरिधमिति रचसा  
किं फलं दूरदूरे  
तन्नामाशुद्धबुद्धेर्न च लघु मनस -  
शेषाधनं भक्तितोहन्यं।

तन्ने रिषेण कृषीष्ठाञ्जुषि कृतसकल -  
प्रार्पणं भक्तिभारं  
येन स्यां मङ्गु किष्किदगुरुरचनमिल -  
तुप्रबोधञ्जुदात्मा ॥ 94.6 ॥

शब्दब्रह्मण्यपीह प्रयतितमनस -  
ञ्जां न जानन्ति केचिं  
कष्टं रक्ष्यश्रमास्ते चिरतरमिह गां  
विद्वते निष्प्रसूतिम्।  
यस्यां रिश्राभिरामास्सकलमलहरा  
दिर्यलीलारताराः  
सच्चिंसान्द्रं च रूपं तर न निगदितं  
तां न राचं त्रियासम् ॥ 94.7 ॥

यो यारान् यादृशो रा रमिति किमपि नै -  
रारगच्छामि डूम -  
नेरखानन्यभारञ्जुदनुभजनमे -  
राद्रिये चैद्यरैरिन्।  
रलिङ्गानां रदङ्घ्रिप्रियजनसदसां  
दर्शनस्पर्शनादि -  
डूयान्ने रप्रपूजानतिनुतिगुणक -  
मानुकीर्त्यादरोहपि ॥ 94.8 ॥

यद्यल्लभ्येत ततुतर समुपहतं  
देर दासोहस्यि तेहहं  
रदोहोन्नार्जनाद्यं भरतु मम मुहः  
कर्म निर्मायमेर।  
सूर्याग्निब्रह्मणात्मादिषु लसितचतु -

बाह्माराधये वरां  
वरांप्रेमार्द्रवररूपो मम सततमभि -  
व्यन्दतां भक्तियोगः ॥ 94.9 ॥

एक्यं ते दानहोमब्रतनियमतप -  
स्साङ्ग्ययोगैर्दुरापं  
वरांससैनैर गोप्यः किल सुकृतितमाः  
प्रापुरानन्दसान्द्रम्।  
भक्तेश्वरन्येषु भूयस्स्वपि बह्मनुषे  
भक्तिमेर वरमासां  
तन्मे वरभक्तिमेर द्रव्य हर गदान्  
कृष्ण रातालयेष ॥ 94.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुर्नरतितमं दशकं समाप्तम् ॥